326/4/0/12

शोधार्थी - योगवती पारीक
निर्देशक - प्रो. एस. इनायत ए. जैदी
सह निर्देशक - प्रो. मुजीब अशरफ
विभाग - इतिहास एवं संस्कृति , जामिया मिलिया इस्लामिया , जामिया नगर, नई दिल्ली-110025
शोध-प्रबन्ध - भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में मारवाड़ी समुदाय की भूमिका

भारतीय राष्ट्रवाद के विकास की पृष्ठभूमि की यह विशेषता रही है कि सामान्यतः सारा भारतीय समाज विभाजित व विखण्डित रहा है एवम् अपनी-अपनी शक्तिशाली परम्पराओं व संस्थाओं से संचालित रहा है। किसी भी अन्य राष्ट्र में राष्ट्रवाद का उदय ऐसी परम्पराओं व संस्थाओं के संदर्भ में नहीं हुआ। अत्यन्त विस्तृत भू-भाग, बढ़ती हुई जनसंख्या तथा भिन्नता लिए हुए राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक संरचना व धार्मिक परम्पराएं आदि कारणों से भारतीय राष्ट्रवाद के उद्भव व उत्थान का अनुभव काफी रोचक व उपयोगी है। विश्व के किसी भी अन्य देश की अपेक्षा भारत में अपनी भूतकालीन सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक संरचना के प्रति 'आत्मरक्षात्मकता' का भाव व इच्छाशक्ति प्रबल रूप से बने रहे हैं। भारतीय राष्ट्रवाद के लिए एक रोचक तथ्य यह भी है कि इसका उदय राजनीतिक पराधीनता के युग में हुआ।

ब्रिटेन ने अपनी स्वार्थपूर्ति हेतु भारत के आर्थिक ढ़ांचे को आमूल परिवर्तित किया, राज्य व्यवस्था में परिवर्तन, आधुनिक शिक्षा पद्धति, आवागमन के नवीन साधन आदि अनेक संस्थाओं को स्थापित किया। इनके परिणामस्वरूप नए आर्थिक-सामाजिक वर्गों का जन्म हुआ, जिनकी नवीन आवश्यकताएं थी व जो नवीन सामाजिक-आर्थिक शक्तियों के रूप में भूमिका निष्पादित करने वाले थे। सही अर्थों में ब्रिटेन की भारत विजय एक उन्नत, गतिशील, आधुनिक पूंजीवादी अर्थव्यवस्था की अनुन्नत, गतिहीन, मध्यकालीन सामंती अर्थव्यवस्था पर विजय थी, जिसने भारत के मूल आर्थिक-सामाजिक ढांचे को नष्ट करते हुए प्रतिबन्धों के अन्तर्गत नवीन ढांचे का निर्माण होने दिया। इसी राजनीतिक पराधीनता के दिनों में भारतीय राष्ट्रवाद का आर्विभाव हुआ, जो ब्रिटिश शक्ति के हितों से उत्पन्न शक्तियों की पारस्परिक क्रिया प्रतिक्रिया के परिणामस्वरूप विकसित हुआ। इस राष्ट्रवाद के विकास के अनेक चरण थे तथा जैसे-जैसे एक चरण दूसरे की ओर वढ़ा, इसका सामाजिक आधार व्यापक होता गया, इसके लक्ष्य साहसिक होते गए, अधिक स्पष्टता के साथ परिभाषित होते गए तथा यह विभिन्न रूपों में अभिव्यक्त होता गया। नवोत्पन्न सामाजिक तत्व अपनी अपरिहार्य प्रकृति के कारण ब्रिटिश साम्राज्यवाद से टकराए और ये भारतीय राष्ट्रवाद के विकास के लिए प्रेरणा व आधारभूमि भी सिद्ध हुए। अब जो राष्ट्रीय जीवन उत्पन्न हुआ, उसके प्रत्येक क्षेत्र में जागृति उत्पन्न व विकसित होने लगी तथा राष्ट्रीय जीवन एक संगठित आन्दोलन का रूप लेता गया। भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों, समुदायों, समाजों, जातियों आदि के इसमें सम्मिलित होते जाने से इसका जनाधार भी व्यापक होता गया। भारतीय राष्ट्रवाद के भाव से पुष्ट व उत्पन्न भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के आधार व लक्ष्य क्रमिक रूप से विकसित हुए क्योंकि ब्रिटिश हित रक्षार्थ निर्मित, क्रियान्वित व प्रभावी नीतियों ने भारत का स्वस्थ व स्वतंत्र विकास नहीं होने दिया, जिससे विभिन्न सामाजिक वर्ग भिन्न भिन्न समयों पर अपने हितों की पूर्ति हेतु जागृत व विकसित हुए। इसके परिणामस्वरूप जब उनके हित ब्रिटिश हितों से टकराए तव वे अपरिहार्य रूप से राष्ट्रीय आन्दोलन की धारा में शामिल होते गए तथा राष्ट्रीय आन्दोलन क्रमिक रूप से निरन्तर शक्तिशाली होता गया एवं इसी के अनुरूप इसके उद्देश्य तथा लक्ष्य परिवर्तनशील वनकर व्यापक हुए। राष्ट्रीय आन्दोलन विभिन्न वर्गों द्वारा सम्मिलित साध्य 'राष्ट्रीय स्वतंत्रता' की प्राप्ति हेतु किया गया एकतावद्ध व प्रभावी प्रयास बन गया। यह आन्दोलन वहुमुखी आन्दोलन बन गया, जिसका चरम लक्ष्य 'सार्वभौम व समग्र क्रन्ति' की परिकल्पना पर आधारित था।

जिसका एक पक्ष था - राष्ट्रीय स्वतंत्रता की प्राप्ति तो दूसरा पक्ष था - प्राणवान, स्वस्थ, सशक्त व गतिशील समाज का निर्माण, जिससे 'प्राप्त स्वतंत्रता' को पुनः खो देने की स्थिति उत्पन्न न हो सके। इस आन्दोलन को अनेक राष्ट्रवादी नेताओं ने नेतृत्व देकर, विचारकों ने चिन्तन के माध्यम से, कार्यकर्त्ताओं ने राष्ट्रवादी नेताओं द्वारा निर्दिष्ट कार्यों को सक्रियता से क्रियान्वित कर, समर्थकों ने समर्थन देकर, उदारवादियों, उग्रवादियों, क्रान्तिकारी राष्ट्रवादियों, गांधीवादियों तथा अन्य राष्ट्रीय विचारधारावादियों ने अपनी-अपनी निष्ठा के अनुसार तन-मन-धन से संपूर्ण क्षमता के साथ पुष्ट करते हुए सफल बनाया।

राष्ट्रवाद एवं भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के उदय, विकास एवं सुदृढ़ीकरण में नवीन सामाजिक शक्तियों की महती भूमिका रही, जो नवोत्पन्न सामाजिक-आर्थिक वर्गों का परिणाम था। भारत पर ब्रिटिश विजय ने जिन नवीन सामाजिक वर्गों व उनकी नवीन आवश्यकताओं-अपेक्षाओं को उत्पन्न किया, वे उपनिवेशवाद के उत्पाद थे। इन्हीं के अन्तर्गत भारतीय पूंजीपति वर्ग की उत्पत्ति हुई, जिसका स्वतंत्र व स्वस्थ विकास न होने से यह हर दृष्टि से अपने ब्रिटिश प्रभुओं पर पूर्णतया निर्भर था व इन अर्थों में नवोत्पन्न भारतीय व्यापारी, साहूकार, सूदखोर, पूंजीपति आदि से निर्मित वर्ग अपनी हित-पूर्ति के लिए पूर्ण राजभक्त था। इसी नए निर्मित आर्थिक वर्ग में राजपूताना से निष्क्रमित होकर ब्रिटिश भारत में अपने व्यापारिक हितों की पूर्ति हेतु विभिन्न जातियां प्रयासरत हुई, जिनसे एक 'मारवाड़ी समुदाय' उत्पन्न हुआ। आश्चर्यजनक तथ्य यह था कि यह समुदाय सामाजिक-धार्मिक-सांस्कृतिक दृष्टि से 'यथास्थितिपालकता की मानसिकता' से परिपूर्ण था। आर्थिक हितों की दृष्टि से ये सदैव राजभक्त रहे, अतः भारत के नवीन परिदृश्य के अन्तर्गत मारवाड़ी समुदाय के राजभक्ति-भाव का तादात्मय किस प्रकार स्थापित हो सकेगा, इसका अध्ययन किए जाने के प्रति रूचि उत्पन्न होना स्वाभाविक था। यद्यपि यह स्पष्ट तथ्य है कि कोई भी व्यक्ति, संस्था, जाति, वर्ग, समुदाय, संप्रदाय आदि अकेले कोई प्रभावी कार्य निष्पादित नहीं कर सकते। प्रभावी व सफल परिणाम हेतु सभी का सहयोग अनिवार्य तत्व है। किन्तु फिर भी, यह महत्वपूर्ण तथ्य है कि अकेला व्यक्ति, संस्था, जाति, वर्ग, समुदाय, संप्रदाय आदि ऐसा दृष्टांत उत्पन्न कर सकते हैं, जो अन्यों के लिए प्रेरणा का कार्य करे। इस दृष्टि से 'मारवाड़ी समुदाय' हमें महत्वपूर्ण दिखाई देता है, जो पूर्णतया सुषुप्त, गतिहीन, प्राणहीन तथा यथास्थितिपालकता की रक्षा की प्रभावी मानसिकता से परिपूर्ण समाज था किन्तु जिसने नवीन परिस्थितियों को अतिशीघ्र पहचान कर स्वयं को तदनुसार परिवर्तित करते हुए व्यक्ति-हित को समुदाय-हित में तथा समुदाय-हित को राष्ट्रहित में प्रभावी रूप में समाहित करते हुए राष्ट्रीय आन्दोलन व राष्ट्रीय विचारधारा में संलग्न कर उसमें संलिप्त होकर सहयोग किया। इस समुदाय का अल्पसमय में गतिशील जीवन्त समाज के रूप में परिवर्तित होकर उन्नयन करना एक महत्वपूर्ण तथ्य है व उससे अधिक आश्चर्यजनक तथ्य यह है कि जिस समुदाय के संपूर्ण हित राज्य के साथ मधुर संबंधों पर पूर्ण निर्भर करते हों, वह समुदाय राष्ट्रवादी शक्तियों से न केवल जुड़ा बल्कि उसने प्रभावी भूमिका को निष्पादित करते हुए राष्ट्रीय कार्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया। अपने शोधकार्य हेतु हमने भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में मारवाड़ी समुदाय की भूमिका का विशिष्ट अध्ययन किया है एवं प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध को आठ अध्यायों में विभक्त कर अपने शोध विन्दू के अध्ययन का प्रयास किया है।